२. नदी के द्वीप

(कवि के वैयक्तिक स्वभाव या द्वीप भाव को व्यक्त करनेवाली यह प्रसिद्ध कविता है। कवि ने स्वयं कहा है कि - 'किन्तु हम हैं द्वीप, हम धारा नहीं है। हम बहेंगे तो रहेंगे नहीं'। इससे यह स्पष्ट है कि कवि अपनी वैयक्तिकता को सुरक्षित बनाए रखना चाहता है। मध्यवर्गीय बुद्धिजीवी व्यक्ति भीड़ से अलग रहकर जीना चाहता है। वह इस अकेलेपन को अपनी नियति मानकर उसे स्वीकार कर लेता है। उसी में अपने जीवन की सार्थकता देखता है। फिर भी वह अपने आपको समाज का अंग मानता है। नदी ही उसे जन्म देती है आकार देती है और वह उसी का पुत्र है। जिस प्रकार नदी के भीतर रहकर भी द्वीप का अपना स्वतंत्र अस्तित्त्व होता है उसी प्रकार समाज में रहकर भी व्यक्ति का अपना स्वतंत्र महत्त्व होना चाहिए। अगर कभी द्वीप उखड जाए रेत बन जाए. तब भी नदी नए द्वीप का निर्माण करती है उसी प्रकार समाज में भी व्यक्ति के व्यक्तित्व का निर्माण बार-बार होता रहेगा। व्यक्ति और समाज दोनो एक दूसरे के लिए अनिवार्य है। समाज में व्यक्ति का व्यक्तित्त्व संस्कारित होता रहा है। व्यक्ति के महत्त्व को स्वीकार किया जाना आवश्यक है।)

१

हम नदी के द्वीप हैं
हम नही कहते कि हमको छोडकर स्त्रोतस्विनी बह जाय।
वह हमें आकार देती है
हमारे कोण, गलियाँ, अन्तरद्वीप, उभार सैकत कूल,
सब गोलाइयाँ उसकी गढी है।
माँ है वह इसीसे हम बने है।

२

किन्तु हम है द्वीप।
हम धारा नही है।
स्थिर समर्पण है हमारा। हम सदा से द्वीप है स्रोतस्विनी के

Scanned with CamScanner

किन्तु हम बहते नही हैं। क्योंकि बहना रेत होना है।
हम बहेंगे तो रहेंगे ही नहीं।
पैर उखडेंगे। प्लावन होगा। ढहेंगे। सहेंगे। बह जाओगे।
और फिर हम चूर्ण होकर भी कभी क्या धार बन सकते?
रेत बनकर हम सलिल को तनिक गँदला ही करेंगे।
अनुपयोगी ही बनायेंगे।

३

द्वीप हैं हम।
यह नही है शाप। यह अपनी नियति है।
हम नदी के पुत्र हैं। बैठे नदी के क्रोड में।
वह बृहद भूखंड से हमको मिलाती है।
और वह भूखंड
अपना पितर है।

४

नदी! तुम बहती चलो।
भूखंड से दाय हमको मिला है, मिलता रहा है,
माँजती, संस्कार देती चलो,
यदि ऐसा कभी हो
तुम्हारे आह्लाद से या दूसरों के किसी स्वैराचार से -
अतिचार से
तुम बढो, प्लावन तुम्हारा घरघराता उठे
यह स्रोतस्विनी ही कर्मनाशा कीर्तिनाशा घोर
काल-प्रवाहिनी बन जाय
तो हमें स्वीकार है वह भी। उसी में रेत होकर
फिर छनेंगे हम। जमेंगे हम। कहीं फिर पैर टेकेंगे।

Scanned with CamScanner

कहीं फिर भी खडा होगा नये व्यक्तित्व का आकार।
माता ! उसे फिर संस्कार तुम देना।

स्वाध्याय :

१. 'नदी के द्वीप' कविता के भावसौंदर्य को स्पष्ट कीजिए।

२. 'व्यक्ति और समाज दोनो एक दूसरे के लिए अनिवार्य हैं'। नदी के द्वीप कविता के आधारपर समझाइए।

३. 'नदी के द्वीप' कविता की मूल संवेदना की समीक्षा कीजिए।

Scanned with CamScanner

कविता की व्याख्या :

'नदी के द्वीप' कविता कवि अज्ञेय के काव्य संग्रह 'हरी घांस पर क्षणभर' से ली गयी है। यह कविता व्यक्तित्व विषयक अज्ञेय की धारणा का परिचय देती है। वस्तुत: 'नदी का द्वीप' व्यक्तित्व का प्रतीक है। नदी की धारा द्वीपों को आकार देती है। उन्हे बहाकर वही पुन: उसका निर्माण करती है। किन्तु द्वीप धारा से भिन्न है। इसी प्रकार जीवन की धारा व्यक्तित्व का निर्माण करती है। व्यक्तित्व वैसा ही विशिष्ट है, जैसा द्वीप। जीवन से निर्मित होकर भी उसमें रहकर और उससे अर्थ पाकर भी व्यक्तित्व एक विशिष्ट सत्ता है। इस द्वीप होने की स्थिति को शाप न मानकर अज्ञेय ने उसे अपनी नियति कहा है। द्वीप पुत्र है, और भूखंड पितर है। इस कविता में अज्ञेय ने विशिष्ट व्यक्तित्व और व्यापक जीवन से अनवरत सम्बद्ध होने के भाव को एक दूसरे से जोड़ने का यत्न किया है।

१) हम नदी के द्वीप हैं ---- हम बने हैं।

कवि स्वयं को नदी का द्वीप मानता है। उसका कहना है, कि संसार की यह नदी उसे छोड़कर बह जाय तथा वह अपना पृथक् अस्तित्व रखते हुए भी नदी के मध्य में ही रहना चाहता है। कवि कहता है, कि हम नदी के द्वीप हैं। नदी ही हमारी माँ हैं, क्योंकि उसीसे इन द्वीपों का सृजन हुआ है और यह नदी ही है जो इन द्वीपों के कोने, उनके गलियों, उनके अंतरीप, इनके उभार एवं उनके बालूमय किनारों का निर्माण करती है तथा इन द्वीपों का सम्पूर्ण नदी पर ही आधृत है। कहने का अभिप्राय यह है, कि कवि स्वयं को संसार द्वारा निर्मित ही मानता है।

२) किन्तु हम हैं द्वीप ----- अनुपयोगी ही बनायेंगे।

कवि कह रहा है, कि वह द्वीप अवश्य है, पर नदी की धारा नहीं है और उसने नदी के समक्ष अपना स्थिर रूप में समर्पण किया है तथा वह अपने को हमेशा से ही द्वीप मानता है। कवि कहता है कि नदी के द्वीप बहते नहीं हैं क्योंकि बहने का अर्थ होता है खंडित होकर बालू बन जाना और यदि वे बह गये तो उनका स्वरूप ही नष्ट हो जायेगा। साथ ही यदि नदी के द्वीप बहने लगे तो उनके पैर उखड़ेंगे, वे डूबेंगे, ढहेंगे, जल की चोट सहेंगे और अंत में बह जायेंगे, परन्तु चूर्ण-चूर्ण होकर भी जल की धार नहीं बन सकते, बल्कि इसके विपरीत वे बालू बनकर जल की धारा ही मलिन करेंगे तथा उसकी उपयोगिता भी नष्ट कर देंगे। इस प्रकार कवि ने यहाँ प्रतीक के माध्यम से स्वयं को और अपने सहयोगियों को इस संसार-रूपी नदी में स्थिर रूप से खड़ा माना है और उसका कहना है कि वह इस धारा के साथ बहना नहीं चाहता, क्योंकि उसे आशंका है कि वह यदि समाज की परम्परा और उसकी भावनाओं में ही बह निकला तो वह समाज का कुछ भी कल्याण न कर सकेगा तथा उसमें अर्थात् समाज में कुछ मलिनता ही लायेगा।

३) द्वीप हैं हम ----- पितर है।

कवि स्वयं को और अपने सहमार्गियों को नदी का द्वीप मानता है तथा उसका कहना है कि वे सब अपने पृथक् अस्तित्व को शाप नहीं मानते, बल्कि भाग्य का चक्र ही मानते हैं और अपने को इस नदी की गोद में लेता हुआ उसका पुत्र ही कहते हैं। इस प्रकार यह नदी ही एक माध्यम है जो उन्हें पृथ्वी से मिलती है और वे इस भूखंड को अपना पिता मानते हैं तथा नदी के बहते रहने की कामना करते हैं। अतएव इससे उन्हें पृथ्वी से जो दान मिलता है वह मिलता रहे। वे यह भी चाहते हैं कि नदी उन्हें अपने बहाव से परिष्कृत करती हुई, उन्हें संस्कार देती हुई चलती रहे।

Scanned with CamScanner

४) नदी! तुम ----- संस्कार तुम देना।

कवि कह रहा है कि यदि कभी ऐसा हो कि नदी की इच्छा से या किसी की मनमानी से या अत्याचार से उसका जल घरघराने लगे और उसमें विप्लव-सा हो उठे तथा वह नदी कर्मनाश, कीर्तिनाश और घोर कालप्रवाहिनी बन जाय तो उन्हें (नदी के द्वीप को) यह स्वीकार है कि वे चूर्ण-चूर्ण होकर उसके प्लावन में डूब जाएँ। इतना अवश्य है कि यह क्षणिक होगा और वे पुनः अपना पैर जमाएंगे तथा अपने व्यक्तित्व का निर्माण करेंगे। वह नदी से यह प्रार्थना करता है कि वह उन्हें (नदी के द्वीप को) पुनः संस्कार प्रदान करे। इस प्रकार कवि संसार के किसी उद्धत प्रवाह से अपने स्वतंत्र व्यक्तित्व के नष्ट हो जाने पर भी उसके पुनः संस्कार की कामना करता है।

इसमें कोई संदेह नहीं कि नदी के द्वीप का प्रतीक अत्यंत भावाभिव्यंजक बन पड़ा है और यह कविता अज्ञेय के विद्रोही और क्रांतिकारी जीवन का भी परिचय देती है। एक समीक्षक के कथनानुसार 'शेखर : एक जीवनी' में विद्रोह के लिए विद्रोह का दृष्टिकोण भी उपस्थित किया हैं। वहाँ उनकी धारणा यह है कि क्रांतिकारी जन्मजात होता है और विद्रोह उसकी अनिवार्य नियति है। उस व्यक्तित्व तथा उसके आदर्श का निरूपण 'नदी के द्वीप' कविता में हुआ है।

संदर्भ सहित व्याख्या :

१) हम नदी के द्वीप ----- अनुपयोगी ही होंगे।

उत्तर : प्रस्तुत पद्यांश अज्ञेयकृत 'नदी के द्वीप' कविता से उद्धृत है।

कवि स्वयं को नदी का द्वीप मानता है। उसका कहना है, कि संसार की यह नदी उसे छोड़कर बह जाय तथा वह अपना पृथक् अस्तित्व रखते हुए भी नदी के मध्य में ही रहना चाहता है। कवि कहता है, कि हम नदी के द्वीप हैं। नदी ही हमारी माँ है, क्योंकि उसीसे इन द्वीपों का सृजन हुआ है और यह नदी ही है जो इन द्वीपों के कोने, उनके गलियों, उनके अंतरीप, इनके उभार एवं उनके बालूमय किनारों का निर्माण करती है तथा इन द्वीपों का सम्पूर्ण नदी पर ही आधृत है। कहने का अभिप्राय यह है, कि कवि स्वयं को संसार द्वारा निर्मित ही मानता है।

कवि कह रहा है, कि वह द्वीप अवश्य है, पर नदी की धारा नहीं है और उसने नदी के समक्ष अपना स्थिर रूप में समर्पण किया है तथा वह अपने को हमेशा से ही द्वीप मानता है। कवि कहता है कि नदी के द्वीप बहते नहीं हैं क्योंकि बहने का अर्थ होता है खंडित होकर बालू बन जाना और यदि वे बह गये तो उनका स्वरूप ही नष्ट हो जायेगा। साथ ही यदि नदी के द्वीप बहने लगे तो उनके पैर उखड़ेंगे, वे डूबेंगे, ढहेंगे, जल की चोट सहेंगे और अंत में बह जायेंगे, परन्तु चूर्ण-चूर्ण होकर भी जल की धार नहीं बन सकते, बल्कि इसके विपरीत वे बालू बनकर जल की धारा ही मलिन करेंगे तथा उसकी उपयोगिता भी नष्ट कर देंगे। इस प्रकार कवि ने यहाँ प्रतीक के माध्यम से स्वयं को और अपने सहयोगियों को इस संसार-रूपी नदी में स्थिर रूप से खड़ा माना है और उसका कहना है कि वह इस धारा के साथ बहना नहीं चाहता, क्योंकि उसे आशंका है कि वह यदि समाज की परम्परा और उसकी भावनाओं में ही बह निकला तो वह समाज का कुछ भी कल्याण न कर सकेगा तथा उसमें अर्थात् समाज में कुछ मलिनता ही लायेगा।

Scanned with CamScanner

प्र.१ : 'नदी के द्वीप' कविता की मूल संवेदना स्पष्ट कीजिए।

उत्तर : नदी के द्वीप कविता कवि अज्ञेय के काव्य संग्रह 'हरी घांस पर क्षणभर' से ली गयी है। यह कविता व्यक्तित्व विषयक अज्ञेय की धारणा का परिचय देती है। वस्तुत: 'नदी का द्वीप' व्यक्तित्व का प्रतीक है। नदी की धारा द्वीपों को आकार देती है। उन्हे बहाकर वही पुन: उसका निर्माण करती है। किन्तु द्वीप धारा से भिन्न है। इसी प्रकार जीवन की धारा व्यक्तित्व का निर्माण करती है। व्यक्तित्व वैसा ही विशिष्ट है, जैसा द्वीप। जीवन से निर्मित होकर भी उस में रहकर और उससे अर्थ पाकर भी व्यक्तित्व एक विशिष्ट सत्ता है। इस द्वीप होने की स्थिति को शाप न मानकर अज्ञेय ने उसे अपनी नियति कहा है। द्वीप पुत्र है, और भूखंड पितर है। इस कविता में अज्ञेय ने विशिष्ट व्यक्तित्व और व्यापक जीवन से अनवरत सम्बद्ध होने के भाव को एक दूसरे से जोड़ने का यत्न किया है।

कवि स्वयं को नदी का द्वीप मानता है। उसका कहना है, कि संसार की यह नदी उसे छोड़कर बह जाय तथा वह अपना पृथक् अस्तित्व रखते हुए भी नदी के मध्य में ही रहना चाहता है। कवि कहता है, कि हम नदी के द्वीप हैं। नदी ही हमारी माँ है, क्योंकि उसी से इन द्वीपों का सृजन हुआ है और यह नदी ही है जो इन द्वीपों के कोने, उनके गलियों, उनके अंतरीप, इनके उभार एवं उनके बालूमय किनारों का निर्माण करती है तथा इन द्वीपों का सम्पूर्ण नदी पर ही आधृत है। कहने का अभिप्राय यह है, कि कवि स्वयं को संसार द्वारा निर्मित ही मानता है।

कवि कह रहा है, कि वह द्वीप अवश्य है, पर नदी की धारा नहीं है और उसने नदी के समक्ष अपना स्थिररूप में समर्पण किया है तथा वह अपने को हमेशा से ही द्वीप मानता है। कवि कहता है कि नदी के द्वीप बहते नहीं हैं क्योंकि बहने का अर्थ होता है खंडित होकर बालू बन जाना और यदि वे बह गये तो उनका स्वरूप ही नष्ट हो जायेगा। साथ ही यदि नदी के द्वीप बहने लगे तो उनके पैर उखड़ेंगे, वे डूबेंगे, ढहेंगे, जल की चोट सहेंगे और अंत में बह जायेंगे, परन्तु चूर्ण-चूर्ण होकर भी जल की धार नहीं बन सकते, बल्कि इसके विपरीत वे बालू बनकर जल की धारा ही मलिन करेंगे तथा उसकी उपयोगिता भी नष्ट कर देंगे। इस प्रकार कवि ने यहाँ प्रतीक के माध्यम से स्वयं को और अपने सहयोगियों को इस संसार-रूपी नदी में स्थिर रूप से खड़ा माना है और उसका कहना है कि वह इस धारा के साथ बहना नहीं चाहता, क्योंकि उसे आशंका है कि वह यदि समाज की परम्परा और उसकी भावनाओं में ही बह निकला तो वह समाज का कुछ भी कल्याण न कर सकेगा तथा उसमें अर्थात् समाज में कुछ मलिनता ही लायेगा।

कवि स्वयं को और अपने सहमार्गियों को नदी का द्वीप मानता है तथा उसका कहना है कि वे सब अपने पृथक् अस्तित्व को शाप नहीं मानते, बल्कि भाग्य का चक्र ही मानते हैं और अपने को इस नदी की गोद में लेता हुआ उसका पुत्र ही कहते हैं। इस प्रकार यह नदी ही एक माध्यम है जो उन्हें पृथ्वी से मिलती है और वे इस भूखंड को अपना पिता मानते हैं तथा नदी के बहते रहने की कामना करते हैं। अतएव इससे उन्हें पृथ्वी से जो दान मिलता है वह मिलता रहे। वे यह भी चाहते हैं कि नदी उन्हें अपने बहाव से परिष्कृत करती हुई, उन्हें संस्कार देती हुई चलती रहे।

कवि कह रहा है कि यदि कभी ऐसा हो कि नदी की इच्छा से या किसी की मनमानी से या अत्याचार से उसका जल घरघराने लगे और उसमें विप्लव-सा हो उठे तथा वह नदी कर्मनाश,

Scanned with CamScanner

कीर्तिनाश और घोर कालप्रवाहिनी बन जाय तो उन्हें (नदी के द्वीप को) यह स्वीकार है कि वे चूर्ण-चूर्ण होकर उसके प्लावन में डूब जाएँ। इतना अवश्य है कि यह क्षणिक होगा और वे पुनः अपना पैर जमाएंगे तथा अपने व्यक्तित्व का निर्माण करेंगे। वह नदी से यह प्रार्थना करता है कि वह उन्हें (नदी के द्वीप को) पुनः संस्कार प्रदान करे। इस प्रकार कवि संसार के किसी उद्धत प्रवाह से अपने स्वतंत्र व्यक्तित्व के नष्ट हो जाने पर भी उसके पुनः संस्कार की कामना करता है।

इसमें कोई संदेह नहीं कि नदी के द्वीप का प्रतीक अत्यंत भावाभिव्यंजक बन पड़ा है और यह कविता अज्ञेय के विद्रोही और क्रांतिकारी जीवन का भी परिचय देती है। एक समीक्षक के कथनानुसार 'शेखर : एक जीवनी' में विद्रोह के लिए विद्रोह का दृष्टिकोण भी उपस्थित किया हैं। वहाँ उनकी धारणा यह है कि क्रांतिकारी जन्मजात होता है और विद्रोह उसकी अनिवार्य नियति है। उस व्यक्तित्व तथा उसके आदर्श का निरूपण 'नदी के द्वीप' कविता में हुआ है।

Scanned with CamScanner